कर्मवीर - अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध

बी०ए०पार्ट-१(हिंदी रचना)

डॉ०मनोज कुमार सिंह,सह-आचार्य, हिंदी विभाग, राजा सिंह महाविद्यालय, सिवान।

देख कर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं।

रह भरोसे भाग के दुख भोग पछताते नहीं।

काम कितना ही कठिन हो किन्तु उकताते नहीं।

भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं।

हो गये एक आन में उनके बुरे दिन भी भले।

सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले फले।1।

आज करना है जिसे करते उसे हैं आज ही।

सोचते कहते हैं जो कुछ कर दिखाते हैं वही।

मानते जी की हैं सुनते हैं सदा सब की कही।

जो मदद करते हैं अपनी इस जगत में आप ही।

भूल कर वे दूसरों का मुँह कभी तकते नहीं।

कौन ऐसा काम है वे कर जिसे सकते नहीं।2।

जो कभी अपने समय को यों बिताते हैं नहीं।

काम करने की जगह बातें बनाते हैं नहीं।

आजकल करते हुए जो दिन गँवाते हैं नहीं।

यत्न करने में कभी जो जी चुराते हैं नहीं।

बात है वह कौन जो होती नहीं उनके किए।

वे नमूना आप बन जाते हैं औरों के लिए।3।

व्योम को छूते हुए दुर्गम पहाड़ों के शिखर।

वे घने जंगल जहाँ रहता है तम आठों पहर।

गर्जते जल-राशि की उठती हुई ऊँची लहर।

आग की भयदायिनी फैली दिशाओं में लवर।

ये कँपा सकतीं कभी जिसके कलेजे को नहीं।

भूलकर भी वह नहीं नाकाम रहता है कहीं।4।

चिलचिलाती धूप को जो चाँदनी देवें बना।

काम पड़ने पर करें जो शेर का भी सामना।

जो कि हँस हँस के चबा लेते हैं लोहे का चना।

”है कठिन कुछ भी नहीं” जिनके है जी में यह ठना।

कोस कितने ही चलें पर वे कभी थकते नहीं।

कौन सी है गाँठ जिसको खोल वे सकते नहीं।5।

ठीकरी को वे बना देते हैं सोने की डली।

रेग को करके दिखा देते हैं वे सुन्दर खली।

वे बबूलों में लगा देते हैं चंपे की कली।

काक को भी वे सिखा देते हैं कोकिल-काकली।

ऊसरों में हैं खिला देते अनूठे वे कमल।

वे लगा देते हैं उकठे काठ में भी फूल फल।6।

काम को आरंभ करके यों नहीं जो छोड़ते।

सामना करके नहीं जो भूल कर मुँह मोड़ते।

जो गगन के फूल बातों से वृथा नहिं तोड़ते।

संपदा मन से करोड़ों की नहीं जो जोड़ते।

बन गया हीरा उन्हीं के हाथ से है कारबन।

काँच को करके दिखा देते हैं वे उज्ज्वल रतन।7।

पर्वतों को काटकर सड़कें बना देते हैं वे।

सैकड़ों मरुभूमि में नदियाँ बहा देते हैं वे।

गर्भ में जल-राशि के बेड़ा चला देते हैं वे।

जंगलों में भी महा-मंगल रचा देते हैं वे।

भेद नभ तल का उन्होंने है बहुत बतला दिया।

है उन्होंने ही निकाली तार तार सारी क्रिया।8।

कार्य्य-थल को वे कभी नहिं पूछते 'वह है कहाँ'।

कर दिखाते हैं असंभव को वही संभव यहाँ।

उलझनें आकर उन्हें पड़ती हैं जितनी ही जहाँ।

वे दिखाते हैं नया उत्साह उतना ही वहाँ।

डाल देते हैं विरोधी सैकड़ों ही अड़चनें।

वे जगह से काम अपना ठीक करके ही टलें।9।

जो रुकावट डाल कर होवे कोई पर्वत खड़ा।

तो उसे देते हैं अपनी युक्तियों से वे उड़ा।

बीच में पड़कर जलधि जो काम देवे गड़बड़ा।

तो बना देंगे उसे वे क्षुद्र पानी का घड़ा।

बन ख़गालेंगे करेंगे व्योम में बाजीगरी।

कुछ अजब धुन काम के करने की उनमें है भरी।10।

सब तरह से आज जितने देश हैं फूले फले।

बुध्दि, विद्या, धान, विभव के हैं जहाँ डेरे डले।

वे बनाने से उन्हीं के बन गये इतने भले।

वे सभी हैं हाथ से ऐसे सपूतों के पले।

लोग जब ऐसे समय पाकर जनम लेंगे कभी।

देश की औ जाति की होगी भलाई भी तभी।

संदर्भ - प्रस्तुत कविता स्नातक प्रथम वर्ष के हिंदी रचना में प्रस्तावित पाठ्य पुस्तक 'पद्य-मंजरी' के 'कर्मवीर' नामक कविता से ली गई हैं। इस कविता के लेखक अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' हैं।

प्रसंग - प्रस्तुत कविता में कवि ने युगीन आवश्यकता के अनुरूप धर्म की जगह कर्म को स्थापित कर लोगों की जीवन -दृष्टि को बदलने का प्रयास किया है ।वैज्ञानिक चेतना के प्रसार के साथ बीसवीं सदी के आरंभ में आधुनिकता का जनमन में प्रसार एक बहुत बड़ी चुनौती थी ।कवि अपनी इस कविता के माध्यम से उस महती कार्य को करने की कोशिश कर रहा है । स्वाधीनता आंदोलन के दौर में कर्म की महत्ता को स्थापित कर कवि उस आंदोलन में गति लाने की कोशिश कर रहा था । इस कविता में कर्मवीर को नये तरह से परिभाषित करते हुए मनुष्यों की जीवन के प्रति नजरिये को बदलने का प्रयास किया है।

भावार्थ - कवि कहता है कि जो कर्मठ लोग होते हैं वे किसी भी बाधा से घबराते नहीं हैं। वे भाग्य के भरोसे बैठकर दुख नहीं भोगते और पछताते भी नहीं हैं। उनके लिए कोई भी काम कठिन नहीं होता और वे अपनी योग्यता का दिखावा भी नहीं करते। वे अपनी लगन और मेहनत से अपनी किसी भी परेशानी को दूर कर सकते हैं। साथ ही ऐसे लोग सदैव ही सुखी रहते हैं।

आगे कवि कहता है कि ऐसे लोग किसी भी काम को कल के लिए नहीं छोड़ते और जो एक बार सोच लेते हैं,उसे करके ही दम लेते हैं। ऐसे लोग कभी अहंकार नहीं करते और सबकी सलाह को सुनते हैं।

ऐसे लोग किसी भी काम के लिए कभी दूसरे का मुँह नहीं ताकते और ऐसा कोई काम नहीं है जिसे कर्मठ व्यक्ति कर नहीं सकता।

फिर आगे कवि कहता है कि ऐसे लोग अपना समय व्यर्थ बातों में नहीं गंवाते और किसी काम को कल पर नहीं छोड़ते तथा परिश्रम करने से कभी जी भी नहीं चुराते। अर्थात उनके लिए कोई भी काम कठिन नहीं होता। ऐसे लोग अपनी कार्य-कुशलता के दम पर दूसरों के लिए उदाहरण बन जाते हैं।

आगे कवि कहता है कि चाहे आकाश को छूता हुआ पर्वत शिखर हो, या घना अंधेरी जंगल हो यो उफनती लहर हो या भयानक अग्नि की ज्वाला हो, कुछ भी इनको भयभीत नहीं कर सकती। अर्थात ऐसे लोगों की राह में कैसी भी रूकावट आए तो ये कभी घबराते नहीं और ये अपनी मंजिल पर पहुँच कर ही दम लेते हैं।कर्मवीरों में इतनी लगन होती है कि उन्हें चिलचिलाती धूप की तपिश भी चांदनी जैसी महसूस होती है। वो जरूरत पड़ने पर शेर जैसे बलशाली का भी सामना कर लेते है।वे हँस हँस कर कठिन से कठिन परिस्थितियों को झेल लेते हैं। उनके शब्दकोश में "कठिन" शब्द नहीं होता। लक्ष्य प्राप्ति के लिए कितना भी परिश्रम करना पड़े वे थकते नहीं हैं ।वे कठिन से कठिन कार्य को संभव कर देते हैं ।

आगे कवि कहता है कि कर्मवीरों में इतनी लगन होती है कि वे मिट्टी को भी सोना बना सकते हैं । वे रेगिस्तान में भी प्रयासों से हरियाली ला देते हैं। वे अपनी कोशिशों से बबूल में भी चंपा का फूल खिला देते हैं। वे अपने प्रयासों से कौवों को भी कोयल जैसी मधुर गीत गाना सीखा देते हैं। इतिहास प्रमाणित करता है कि कर्मवीरों में

इतना साहस होता है कि बंजर जमीन पर भी कमल खिला देते हैं और ठूँठ हो गए पेड़ पर फूल -फल उगा देते हैं।आगे कवि कहता है कि कर्मवीर किसी भी कार्य को आरंभ कर बिना उसे पूरा किये नहीं मानते। वे किसी विपरीत परिस्थितियों से घबड़ाकर बीच में ही काम अधूरा छोड़ भागते नहीं हैं । वे काल्पनिक बातों में विश्वास नहीं करते । उन्हें अपने श्रम पर भरोसा होता है। वे मन ही मन कल्पना में ही लक्ष्य को प्राप्त करने का स्वप्न नहीं देखते। इन कर्मवीरों की मेहनत से सामान्य कोयला भी हीरा में बदल जाता है। इनमें शीशा को भी अद्भुत रत्नों में बदल देने की शक्ति होती है। वे अपनी मेहनत के बल पर दुर्गम पर्वतों के बीच से सड़क निकल देते हैं , रेगिस्तान में नदियां बहा सकते हैं और जंगलों में भी मंगल सृजित कर देते हैं। कर्मवीर अपनी जिज्ञासा के बल पर ब्रह्मांड के रहस्यों को प्रकट कर दिया।

आगे कवि कहता है कि कर्मवीर कार्य करने की परिस्थितियों पर ध्यान न देकर कार्य पर ध्यान देते हैं । उनमें असम्भव को संभव बना देने की शक्ति होती है। वे विपरीत माहौल और अड़चनों से घबराते नहीं है अपितु उस विपरीत परिस्थिति को साहस और उत्साह के दम पर सामना करते हैं। वे पर्वत के समान बाधाओं को अपनी युक्ति के बल पर पार कर जाते हैं ।वे समुद्र की अनंतता को भी अपनी युक्ति से नियंत्रित कर लेते हैं और आकाश की रहस्यमयता को भी सामने ला देते हैं।

आगे कवि कहता है कि आज सभी देशों का यदि पड़ताल करें तो हम इस नतीजे पर पहुंचेंगे कि जिस देश में कर्मवीरों का जन्म हुआ है ,

वही देश फले-फुले है और वहीं विद्या,बुद्धि,धन और यश की अभिवृद्धि हुई है। इस कविता के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि भारत के समस्त नागरिक कर्मवीर बनें और अपने देश को विकास के चरम पर ले जाएं ।बिना कर्मवीर बने विकास का चरम पा लेना असंभव है ।